बरगद (वट)

विभिन्न नाम

हिन्दी – बरगद। संस्कृत – न्यग्रोध। पंजाबी – बूहड़। बंगला – बट। असमिया – बोर गाछ। मराठी – वड। गुजराती – वड। कन्नड़ – आलद मर। अरबी – जातुज्जवानिब। अंग्रेजी – Banayan Tree बनयान ट्री। लेटिन – फाइकस बेंगालेन्सिस (Ficus Benghalensis) यह वनस्पति जगत में मोरेसी (Moraceae) कुल का सदस्य है।

यह एक विराट वृक्ष है, जिसका तना अत्यंत दृढ़ तथा शाखायें खूब फैली होती हैं। इसकी जड़ें खास किस्म की होती हैं जिन्हें स्तम्भ मूल कहते हैं। ये जड़ें हवा में लटकती रहती हैं और जमीन पर पहुँच कर व्यास में फैलकर पेड़ के तने का रूप ले लेती हैं। यही इसकी खास पहचान है।

इसका विशाल एवं दृढ़ स्तम्भ हल्के भूरे वर्ण का होता है। इस पर लगी हुई शाखायें भी कठोर एवं वजनदार होती हैं। इन्हीं शाखाओं में से नीचे की ओर स्तम्भ मूलें निकलती हैं। ये मूलें भी अत्यंत मजबूत होती हैं। जब ये मूलें जमीन तक पहुँच जाती हैं, तब जमीन में धँसकर शनैः – शनैः मोटी होती हैं तथा कालान्तर में स्तम्भ की भांति ही दिखाई देने लगती हैं। पत्तियां साधारण प्रकार की, मोटी, सलंग किनोर वाली तथा गोल शीर्ष वाली होती हैं। इनके वृन्त छोटे होते हैं। जब इन पत्तियों को तोड़ा जाता है, तब उसमें से दूध निकलता है विज्ञान की भाषा में इसे लेटेक्स (Latex) कहते हैं।

शाखाओं पर ही इसके पुष्प लगते हैं जो कि उदुम्बरक प्रकार के होते हैं तथा कोटों के निषेचन करने से वे ही फल में बदल जाते हैं। इस के फल भी घुण्डी अथवा सामान्य लाल बेर के आकार के होते हैं – वे आसानी से फूट-टूट जाते हैं तथा उनमें बीज निकलते हैं। वट के बीज अपने आपमें विलक्षण होते हैं। ये सूक्ष्म होते हैं। यह बीज

एक विशाल महान वृक्ष को जन्म देने में सक्षम होते हैं। इन फलों को चिड़िया बड़े चाव से खाती हैं। बरगद की जड़ें काफी मजबूत होती हैं। ये जमीन में अंदर की ओर धँसी होती हैं तथा जमीन के भीतर एक घना जाल बना देती हैं।

आयुर्वेद के मतानुसार इस वृक्ष के सभी हिस्से मधुर, शीतल, आंतों का संकोचन करने वाले, कफ, पित्त तथा वृणों को नष्ट करने वाले तथा वमन, ज्वर, योनिदोष, मूर्च्छा और विसर्प में लाभदायक हैं, इसके नवीन पत्ते गलित कुष्ठ में फायदा पहुँचाते हैं। इसका दूध वेदनानाशक तथा वृणरोपक होता है, इसके सूखे पत्ते पसीना लाने वाले और कोमल पत्ते कफनाशक होते हैं। इसकी छाल स्तम्भक होती है। यूनानी मतानुसार वट सर्द और खुश्क होता है। इसका दूधिया रस कामोदीपक, पौष्टिक, फोड़े को पकाने वाला, सूजन को दूर करने वाला और सुजाक में लाभदायक होता है।

इसकी जड़ रक्तस्त्रावरोधक, कामोदीपक तथा सुजाक, उपदेश, पित्तविकार, रक्तातिसार तथा यकृत की सूजन में लाभदायक होती है। इसके पत्ते घावों को अच्छा करने वाले और पित्तविकार में लाभ दायक होते हैं –

खजाइनुल अदविया के मतानुसार बड़ काबिज होता है तथा यह पित्त एवं कफ के दोषों के साथ-साथ फोड़े फुन्सियों को भी साफ करता है तथा शरीर में रक्त शोधन करता है। इसकी नवीन कोपलें वायु को बिखेरती हैं अर्थात् वातपीड़ा में उपकार करती हैं।

वटवृक्ष की कुछ विशेषताएँ

वटवृक्ष पीपल की भाँति ही एक महान वृक्ष है। जहाँ पीपल वृक्षों का राजा है तो वट भी उससे कुछ कम नहीं। कम से कम इसे वृक्षों का मंत्री कह सकते हैं। कई मायनों में यह पीपल से भी इक्कीसा है। वटवृक्ष की अनेक विशेषताओं को देखते हुए ही इसे भारत वर्ष का राष्ट्रीय वृक्ष कहा जाता है। यह बंग्लादेश का भी राष्ट्रीय वृक्ष है। वटवृक्ष की कुछ खास विशेषताएँ निम्न हैं:

1. अंजीर अर्थात् 'उदुम्बर' की श्रेणी में आनेवाला यह वृक्ष विशालतम होता है – इसीलिये इसे ''उदुम्बरकों का राजा'' (king of figs) कहते हैं।

2. यह कभी भी भूमि पर सीधा जन्म नहीं लेता है। यह या तो दीवारों पर, छतों की मुँडेरों पर अथवा किसी अन्य वृक्ष पर उपरिरोही (Epiphytic plant) के बतौर पनपता है। इसके बीज दीवारों की दरारों में अथवा किसी भी वृक्ष पर पहुँचने पर वृद्धि को प्राप्त होते हैं।

3. इसके बीजों का प्रसारण पक्षियों के माध्यम से होता है। वे ही इसके बीज युक्त 'उदुम्बरक' को यहाँ-वहाँ ले जाते हैं तथा उपयुक्त दशाओं को प्राप्त करने के पश्चात वे बीज अंकुरित होते हैं।

4. इसका स्तम्भ और इसकी शाखाएँ दोनों ही बहुत भारी होते हैं। न केवल वे वजनदार होते हैं बल्कि काफी ताकतवार भी होते हैं।

5. इसकी शाखाओं से नीचे की ओर जटाकार जड़ें निकलती हैं उन्हें जटामूल (Prop roots) कहते हैं। ये जड़ें जमीन तक जाकर जमीन में प्रवेश कर जाती हैं तथा जमीन में प्रवेश करने के पश्चात् शनैः शनैः मोटी एवं ताकतवर होती जाती हैं। कालान्तर में ये स्तम्भ

के समान ही हो जाती हैं। ऐसी कई मूलों के बनने के कारण काफी विशाल एवं फैले हुए वटवृक्षों में मूल स्तम्भ पहचानना सभी कठिन हो जाता है। विशाल एवं पर्याप्त फैला हुआ वटवृक्ष अत्यंत सुंदर दिखाई देता है।

6. वटवृक्ष अधिकतम 100 फीट तक ऊँचा होता है किन्तु फैलने में इसकी कोई सीमा नहीं होती। कलकत्ता का विशाल वटवृक्ष इसके फैलने का अप्रतिम उदहारण है।

7. इसके पत्ते मोटे, लैदरी, चमकदार होते हैं जिनको तोड़ने पर दूध के समान द्रव (Latex) निकलता है। यह लैटेक्स अन्य दूध वाले वृक्षों की तुलना में अधिक होता है।

8. इस वृक्ष पर 400 जातियों के जीव आश्रय लेते हैं जिनकी संख्या करोड़ों में होती है।

9. इसके द्वारा उत्सर्जित आक्सीजन की मात्रा अन्य वक्षों की तुलना में अधिक होती है।

10. वटवृक्ष की जड़ें जमीन में गहरी जाकर काफी फैलती हैं – इतने विशाल वृक्ष को सम्भालने के लिये जरूरी भी है इसकी जड़ें जो जमीन के भीतर होती हैं वे भी स्तम्भ की भाँति काफी प्रबल होती हैं।

11. वटवृक्ष की छाया काफी घनी एवं शीतल होती है।

12. अन्य वृक्षों की तुलना में वटवृक्ष के द्वारा कार्बन डाय ऑक्साइड का अवशोषण ज्यादा होता है। इस प्रकार यह वृक्ष वातावरण में से कार्बनडाय ऑक्साईड को न्यून कर ग्रीन हाऊस प्रभाव को भी कम करने में सहायक होता है।

13. वटवृक्ष की अधिकतम आयु अज्ञात है फिर भी यह सैकड़ों वर्षों तक जीवित रहता है, बना रहता है।

14. इसकी वायुवीय जड़ें कालान्तर में स्तम्भरूप धारण कर वैसी ही हो जाती हैं।

वटवृक्ष के पौराणिक महत्व

धार्मिक दृष्टि से पीपल और वटवृक्ष का सर्वाधिक महत्व है, यही कारण है कि अधिकांश मंदिरों के प्रांगण में आपको पीपल अथवा बरगद का वृक्ष अवश्य ही मिल जायेगा। यह वृक्ष बड़ा होने पर विशाल आकार का हो जाता है, इसलिये प्रायः इसका रोपण घरों में नही किया जाता। ग्रमीण क्षेत्रों में यह वृक्ष बहुतायत में देखा जा सकता है। ग्रामीण क्षेत्रों में जिनके पास जमीन पर्याप्त मात्रा में होती है, वहाँ वटवृक्ष देखा जा सकता है। चूँकि वटवृक्ष अत्यधिक विशाल होता है, इसलिये अनेक व्यक्ति पर्याप्त जमीन होने के बाद भी इस वृक्ष का रोपण एवं पालन अपने घरों की सीमा में नही करना चाहते। सड़क किनारे एवं खुले स्थानों पर इस वृक्ष को देखा जा सकता है। मंदिरों में तो पीपल के साथ – साथ बरगद के वृक्ष भी अवश्य ही देखने में आते हैं।

पीपल की भाँति वटवृक्ष के भी अनेक पौराणिक वृत्तांत एवं महत्व हैं जिसमें से कुछ को नीचे लिखा जा रहा हैः

1. कहा जा है कि इस वृक्ष की छाया में 24 घण्टों में एक बार समस्त देवी-देवता विश्राम करने के लिये आते हैं। इसलिये इस वृक्ष के समक्ष जो भी कामना की जाती है, उन्हीं के दिव्य आशीर्वाद के परिणामस्वरूप पूर्ण होती है।
2. यह वृक्ष ब्रह्माजी का प्रतिबिम्ब स्वरूप है तथा वटवृक्ष ब्रह्माजी की सृष्टि का द्योतक है – ऐसा पुराणों में कहा गया है।
3. इसकी मूल ऊपर से नीचे की ओर वृद्धि करती हैं। ज्ञान गंगा का यही आधार है, वेदों का यह मूल सिद्धान्त है – इसलिये हमारे पौराणिक ग्रंथों में वटवृक्ष के संबंध में कहा गया है कि वटवृक्ष को जानने वाला, समझने वाला एक वेदों को जानने वाले मनुष्य के बराबर है।

4. शिव पुराण में कहा गया है कि शिवजी जैसे महान योगी भी वटवृक्ष के नीचे ध्यान लगाते हैं। वटवृक्ष के नीचे ध्यान लगाने से वह शीघ्र एवं प्रगाढ़ लगता है।

5. एक पौराणिक कथा के अनुसार वटवृक्ष को माँ अम्बा द्वारा पृथ्वी पर लाया गया। कथानक ये हैं कि अति प्राचीनकाल में एक विशाल वटवृक्ष सर्पराज वासुकि के पाताल लोक में उपस्थित विशाल उद्यान में लगा हुआ था। एक बार माँ अम्बा के ध्यान में वह वृक्ष आया। उस विशाल वृक्ष की सुन्दरता तथा उसके आकार-प्रकार एवं आभामण्डल को देखकर माता ने उसे लोककल्याणार्थ धरती पर लाने का विचार किया। अपने विचार को मूर्तरूप देने के लिये वे पाताललोक पहुँची, जहाँ उन्होंने सर्पराज वासुकि को घायल कर वटवृक्ष को उस उद्यान से निकाल कर पृथ्वी पर लाने में सफलता प्राप्त की । माता अम्बा के द्वारा पृथ्वी पर लाये गये इस वृक्ष में उन्हीं के प्रभाव से और भी दिव्यता आ गई। इस प्रकार यह वृक्ष समस्त मनुष्य जाति ही नहीं, अनेकानेक जीवों के लिये महान कल्याणकारी अस्तित्व बनाये हुए है। इस अकेले वृक्ष पर 400 से अधिक जातियों के करोड़ों जीव अपना प्रश्रय पाते हैं।

6. पुराणों में एक प्रसंग सावित्री नामक एक पतिव्रता नारी का भी आता है। कथा यूँ है कि सावित्री एक महान पतिव्रता नारी थी। उसका विवाह हुए एक वर्ष भी मुश्किल से हुआ था कि एक दिन एक वटवृक्ष के नीचे उसके पति का अचानक निधन हो गया। सावित्री इस अचानक हुई घटना से अत्यंत ही खिन्न तथा व्याकुल हो उठी। उसने उसी समय वटवृक्ष के नीचे ही उसकी पूजा अर्चना कर ध्यान लगाकर यमराज को झुकने पर मजबूर कर दिया जिसके कारण यमराज ने सावित्री के पति के प्राणों को लौटा दिया। इस प्रकार सावित्री पुनः सौभाग्यवती हो गई इस पौराणिक वृत्तांत के आधार पर भारतीय स्त्रियाँ आज भी वट चौदस व्रत करती हैं। इस व्रत वाले दिन सधवा स्त्रियाँ वट की पूजा-अर्चना करती हैं। इसके चारों और सूती धागा लपेटती हैं तथा इसकी परिक्रमा कर अपने अखण्ड सौभाग्य एवं स्वयं एंव स्वयं के पति के स्वास्थ्य –

आयुष्य आदि की कामना करती है। उनका ऐसा विश्वास है कि वट के इस पूजन से उनका पति सुरक्षित रहता है तथा जन्म जन्मान्तर तक उन्हें वही पति प्राप्त होता है।

7. पुराणों में वटवृक्ष को कल्पवृक्ष की संज्ञा दी गई है। कहा गया है कि यह सपूर्ण कामनाओं की पूर्ति करने वाला महान वृक्ष है।

8. हमारे धार्मिक ग्रंथों में कहा गया है कि वटवृक्ष एक ऐसा महान वृक्ष है जिसका अस्तित्व प्रलय से प्रलय तक होता है इसीलिये इसे 'अक्षय वृक्ष' भी कहते हैं। इलाहाबाद में अवस्थित अति प्रचीन वटवृक्ष 'अक्षयवट' के नाम से जाना जाता है। इसे तीर्थराज प्रयाग का छत्र भी कहते हैं।

9. साधुओं के परमप्रिय शिवलिंग प्रायः वटवृक्ष के नीचे स्थापित किये जाते हैं। पौराणिक मान्यता है कि इससे वे परम जाग्रत रहते हैं। दक्षिण भारत में स्थित दक्षिणाभिमुख शिव मंदिर बरगद के नीचे है।

10. वटवृक्ष एक ऐसा विशाल वृक्ष है जिसकी जड़ें उसकी शाखाओं से जमीन की दिशा में वृद्धि करती है। इस प्रकार अंतरिक्ष में धरती की ओर ब्रह्मा, विष्णु तथा महेश, इन तीनों देवताओं का अस्तित्व होता है, तदनुसार इसकी छाल या कवच विष्णु स्वरूप है, इसकी जड़ें ब्रह्मा को दर्शाती हैं, जबकि इसकी शाखायें शिवस्वरूप हैं। एक अन्य हिन्दू सिद्धान्त के अनुसार प्रत्येक रविवार को वटवृक्ष में लक्ष्मी का पदार्पण होता है तथा इस वृक्ष में कुबेर भी सदैव निवास करते हैं। इस वृक्ष के नीचे ही भगवान विष्णु का जन्म हुआ था, इसी वृक्ष की प्रार्थना के परिणामस्वरूप विश्वामित्र की माता ने उन्हें जन्म दिया था।

11. विष्णु महापुराण के अनुसार प्रलय के समय जबकि समस्त पृथ्वी जलमग्न हो चुकी थी उस समय भगवान विष्णु बड़ के एक पत्र पर विराजमान हुए थे। मार्कण्डेय ऋषि ने भगवान विष्णु के इस अवस्था में दर्शन किये थे।

12. भागवत के अनुसार श्रीकृष्ण भगवान का शयन वटपत्रों पर माना जाता है।

13. भारतीय प्राचीन ग्रंथों में ज्येष्ठमास के कृष्ण पक्ष की अमावस्या को महिलाओं द्वारा वटवृक्ष को पूजे जाने का विधान है। पौराणिक मान्यता है कि महिलाओं द्वारा वटवृक्ष के इस पूजन से उन्हें सौभाग्य, धन एवं सुख शांति की प्राप्ति होती है।

14. वटवृक्ष के पौराणिक महत्वों को देखते हुए भारतीय गाँवों में नर-नारी नित्य वटवृक्ष की पूजा अर्चना कर अपने कल्याण की कामना करते हैं।

जिस प्रकार वटवृक्ष की पौराणिक मान्यताएँ हैं एवं उनके आधार पर इस वृक्ष का भारत में एक विशिष्ट सम्मान है किन्तु भारत ही नहीं बल्कि एशियाई देशों में भी इस वृक्ष की वही प्रतिष्ठा है –

उदाहरण के तौर पर:-

अ. हाँगकाँग में टिन हाऊ मंदिर (Tin Hau Temple) के पास लैम सुएन (Lam Tsuen) में वटवृक्ष को पूजा जाता है।

ब. फिलिपीन्स के लोग वटवृक्ष को एकमहान एवं पूजनीय वृक्ष मानते हैं। उनकी मान्यता है कि बड़ को पूजने से न केवल धन-सम्मान आदि की प्राप्ति होती है बल्कि उससे शांति मिलती है तथा पूजन करने वाले का सर्वार्थ कल्याण होता है।

स. फिलिपीन्स के लोगों की ये मान्यता भी है कि वटवृक्ष में अनेक दिव्य आत्माओं का वास होता है। वहाँ के लोग इसे ''बेलाइट'' (Balite) कहते हैं। उनका मानना है कि वटवृक्ष के पूजन से वे सभी आत्माएँ पूजक का सर्वार्थ कल्याण करती हैं।

द. अनेक एशियाई देशों में ये मान्यता है कि वटवृक्ष एक दिव्य वृक्ष है – इसमें अनेक दिव्य आत्माएँ एवं शक्तियाँ विराजमान रहती हैं – अतः इसे कभी अंगुलि भी नहीं दिखानी चाहिये वर्ना इसमें उपस्थित दिव्य आत्माएँ ऐसा करने वाले का अनिष्ट कर देती हैं। इसीलिये वे वटवृक्ष को कभी भी अंगुलि नहीं दिखाते।

इस प्रकार वटवृक्ष की महानता पौराणिक एवं सांसारिक मान्यताओं के आधार पर स्पष्ट होती है यह बात संदेह से परे है।